आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 346 ARYA SABHA MAURITIUS *1st Nov. to 10th Nov. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

मार्जन-मन्त्राः

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

भावार्थ – प्राणों से भी प्रिय परमात्मा सिर में पवित्रता करे। दुःख-विनाशक परमात्मा आँखों में पवित्रता करे। सदा आनन्दमय और सबको आनन्द देनेवाला परमात्मा कण्ठ में पवित्रता करे । सबसे महान् और सबका पूज्य परमात्मा हृदय में पवित्रता करे । सर्वजगत् उत्पादक परमात्मा नाभि में पवित्रता करे। दुष्टों को सन्ताप देनेवाला परमात्मा पैरों में पवित्रता करे, सत्यस्वरूप अविनाशी परमात्मा पुनः सिर में पवित्रता करे । सर्वव्यापक, सर्वतोमहान् परमात्मा शरीर के सब अङ्गों में पवित्रता करे।

(सार्वदेशिक धर्मार्य सभा)

Mārjana Mantrāh - The Purificatory Verse

Om Bhūh Punātu Shirasi. Om Bhuvah Punātu Netrayoh. Om Swah Punātu Kaṇṭhē. Om Mahah Punātu Hridaye. Om Janah Punātu Nabhyām. Om Tapah Punātu Pādayoh. Om Satyam Punātu Punah Shirasi. Om Kham Brahma Punātu Sarvatra.

Meaning :- Om - Protector, the Supreme Lord, Bhūh - the Giver of life, the Lord who is dearer than vital breath , Punātu - to purify , Shirasi - in the head , Bhuvah - the Remover of sorrow, pain,etc , Netrayoh - in the eyes , Swah - the Giver of happiness , Kaṇṭhē - in the throat , Mahah - the great Lord , Hridaye - in the heart , Janah - the Creator of the world , Nabhyām - in the navel , Pādayoh - in both legs , Satyam - Eternal, Reality , Punah - again , Kham Brahma - The Supreme God as high as the sky , Sarvatra - in all organs.

Purport :- *O God, our Protector, You are the Giver of life, the Remover of sorrows and sufferings, the provider of bliss, the Great Lord, the Creator, the Lord of austerity and truth. You are the Supreme Being. Kindly purify my head, eyes, throat, heart, navel, in short, all my organs so that no part of my body leads me to sin.*

Explanation :- God, the Supreme Lord, is at the origin of genuine bliss. He is reflected only in a pure mind. When we commit sins through our various organs, we pollute our minds. As a dirty mirror cannot reflect our faces, similarly we cannot realise the existence of the Supreme Being through an impure mind. Only that person can attain the bliss of the Almighty whose organs are pure and virtuous. Hence, the above mantra lays stress on the purity of all our organs. By reciting it, we pray the Supreme Lord to purify our power of understanding and vision, our power of speech, brain, intellect, etc.

Dr O. N. Gangoo

धार्मिक परीक्षाएँ

निम्नलिखित धार्मिक परीक्षाओं में भाग लेने के इच्छुक छात्र-छात्राओं को सूचित हो कि :- (i) धर्म प्रवेश, (ii) धर्म परिचय , (iii) धर्म भूषण , (iv) धर्म रत्न , (v) धर्म वाचस्पति , (vi) शास्त्री एवं (vii) वेद वाचस्पति

की परीक्षाएँ शनिवार ३ और १० दिसम्बर तथा रविवार ४ और ११ दिसम्बर को ९.३० से १२.०० बजे और १२.३० से ३.०० बजे होने जा रही हैं । इन परीक्षाओं में बैठने वाले छात्र-छात्राओं को आवेदन-पत्र भरकर अपना परीक्षा शुल्क अपने अध्यापक-अध्यापिका को अथवा ऋषि दयानन्द संस्थान पाई के दफ़्तर में आकर किसी भी शुक्रवार अथवा शनिवार को १०.०० से २.०० बजे तक, देर से देर १६ नवम्बर तक चुका देना चाहिए ।

परीक्षा-शुल्क निम्न प्रकार है :–

धर्म प्रवेश और धर्म परिचय – १०० रुपये
धर्म भूषण और धर्म रत्न – २०० रुपये
धर्म वाचस्पति, शास्त्री एवं वेदवाचस्पति – ३०० रुपये

डॉ० उदयनारायण गंगू

सम्पादकीय

जल देवता

हमारे शरीर के निर्माण में जल एक अति महत्त्वपूर्ण तत्व है। हमारा जीवन तो जल पर आधारित होता है। जल देवता के बिना प्राणी मात्र को जीवित रहना बहुत कठिन है। जिस प्रकार अग्नि देवता हमारे शरीर में गरमी और ऊर्जा-शक्ति उत्पन्न करता है, उसी प्रकार जल देवता भोजन के साथ मिलकर रक्त और शक्ति पैदा करता है तथा हमें स्वस्थ रखता है।

जल एक परोपकारी तत्त्व है। इसकी उपयोगिता हमारे दैनिक जीवन में सर्व विदित है। प्यास बुझाने में एवं ठंडक पहुँचाने में बड़ा सहायक होता है। उधर शारीरिक सफ़ाई, घरेलू वस्तुओं की धुलाई, भोजन की तैयारी आदि कामों में जल बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। जल के अभाव में इंसान अपनी ज़िन्दगी का सफ़र नहीं कर सकता है; जल है तो जीवन है।

वर्षा के रूप में पानी बरसता है, बरसात से हमारी वनस्पतियाँ, खेतियाँ खिल उठती हैं। बाग-बगीचे हरे-भरे हो जाते हैं और अनाजों, फलों-फूलों तथा हरी-भरी पत्तियों की भरमार हो जाती है। सारे तालाब और जलाशय भर जाते हैं, नदियों में पानी उमड़ जाता है, इस अद्‌भुत तत्त्व से सभी जीव-जन्तुओं और बनस्पतियों की रक्षा होती है। जीव-रक्षक जल हमेशा सबका भला करता है, वह देवता स्वरूप है।

जल का सदुपयोग करना हमारा परम कर्तव्य है। उसका उचित उपयोग करने से सबको लाभ है और दुरुपयोग करने से अपनी और दूसरों को हानि है, क्योंकि सूखा पड़ने से जल स्रोत, तालाब, नदियाँ, जलाशय सूखने लगते हैं तथा पानी की कमी महसूस होने लगती है, चारों तरफ़ हाहाकार मच जाता है। पानी की खोज में हम तड़पते रहते हैं फिर जीना दुष्कर हो जाता है।

आज संसार के अनेक देशों में कम बारिश होने से वहाँ की जनता दुखी है। पशु-पक्षी बेहाल हैं, वनस्पतियाँ उजड़ गई हैं, धन-दौलत के होते हुए इंसान तथा अन्य जीव अन्न-जल के बिना बेमौत मारे जा रहे हैं। अकाल पड़ने से उन्हें कई आपत्कालिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। वे दयनीय दशा में हैं।

प्रिय पाठको ! यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे देश में जल की गम्भीर समस्या अभी तक उपस्थित नहीं हुई है। अब ऐसा लगता है कि जंगलों के उजड़ने से, आबादी की वृद्धि तथा उद्योग-धंधों के विकास से पानी की आवश्यकता बढ़ती जा रही है और कभी-कभी जल की कमी नज़र आ जाती है। हम सभी देशवासियों को सतर्क रहना चाहिए, अन्यथा यहाँ भी अनावृष्टि के कारण हम संकट में पड़ सकेंगे ।

हमारी सरकार तो हर एक घर में साफ़ जल वितरित करने का पूरा प्रबन्ध कर रही है Central Water Authority और Water Resource के ज़रिए विशेषज्ञों की मदद से पानी की सुरक्षा एवं व्यवस्था पर पूरा ध्यान दे रही है, जिससे हमारे देश में पानी की अच्छी व्यवस्था हो सके और भविष्य में जल का अभाव न हो ।

आर्य सभा के तत्वावधान में एवं आर्य ज़िला परिषदों के पूरे सहयोग से हम गंगास्नान पर्व के अवसर पर देश के अनेक समुद्र-तटों पर हवन यज्ञ आदि रोचक धार्मिक गतिविधियों का भव्य आयोजन करने जा रहे हैं। उस पावन अवसर पर हम सभी आर्यों को परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे देश में सदा भरपूर पानी हो, जल देवता की कृपा से हमारा देश हरा भरा हो ।

अन्त में हम अपने समस्त भाई-बहनों से विनम्र निवेदन करते हैं कि आप बड़ी श्रद्धा-भक्ति तथा पवित्रता पूर्वक गंगा स्नान पर्व का आनन्द लें, समुद्र तटों की शोभा से हर्षित हों। उस पर्व के उपलक्ष्य में यह दृढ़ संकल्प करें कि आज से कभी भी जल का दुरुपयोग न करेंगे क्योंकि जल देवता की यही पूजा है ।

गंगा स्नान पर्व सभी हिन्दी परिवारों के लिए आनन्दमय हो, ऐसी हमारी कामना है।

बालचन्द तानाकूर

Deepāvali Mahotsav & Rishi Nirvān Divas 2016 29.10.2016 à l'Arya Bhavan, Port Louis

Arya Sabha Mauritius a marqué cette occasion sur l'échelle nationale par un programme qui eut lieu le samedi 29 Octobre 2016 et retransmise en direct par la station de télévision nationale (MBC 3) de 16.00 à 18.00hrs.

Le programme a débuté par un yajna, officié par les pandits et panditās de l'Arya Sabha. Dans son discours de bienvenue, Mr. B. Tanakoor, vice-président a, au nom du Sabha, exprimé les meilleurs vœux de Deepāvali aux membres du mouvement Arya Samaj, aux philanthropes qui soutiennent nos activités et à la population mauricienne. Cette fête symbolise la lumière (les connaissances, la non-violence, la vérité, etc.) qui dissipent les ténèbres (l'ignorance, la violence, le mensonge, etc.) Que les enseignements du Maharishi Dayanand illuminent notre vie et celle d'autrui.

cont. on pg 4

रोड्रिग्स में हिन्दी दिवस

श्रीमती लीलामणि करीमन, एम.ए.

१२ अक्टूबर को डॉ० उदयनारायण गंगू, आर्य सभा मोरिशस के प्रधान एक टोली के साथ रोड्रिग्स पहुँचे। टोली में अठारह पंडित-पंडिताएँ सम्मिलित थे। वहाँ पर हिन्दी प्रचारिणी सभा के मंत्री – श्रीमान् धनराज शंभू तथा कोषाध्यक्ष श्रीमान् रामदीन एवं डॉ० चन्नू जी भी पहुँचे हुए थे। पूरे २२ लोगों ने रोड्रिग्स वालों के साथ मिलकर भव्य रूप से 'हिन्दी दिवस' का उत्सव मनाया । हम लोग 'Le Flamboyant Hotel' में ठहरे हुए थे।

पिछले मार्च महीने में श्रीमान् बालगोबिन (Aryan Senior Citizen Associations के प्रधान) के नेतृत्व में एवं आर्य सभा मोरिशस के प्रधान – डॉ० उदयनारायण के प्रधानत्व में अड़तीस (३८) सदस्य रोड्रिग्स गए थे और लगभग ८० लोगों की उपस्थिति में उसी हॉटल में आर्य समाज की स्थापना हुई थी। श्रीमान् रमणिक चित्तू जी, जो लम्बी अवधि से रोड्रिग्स में प्रवास कर रहे हैं,

समाज के प्रधान बने। वे २०१४ से हिन्दी संगठन की ओर से रोड्रिग्स वालों को हिन्दी भाषा सिखा रहे हैं ।

श्रीमान् चित्तू जी के सहयोग से 'हिन्दी दिवस उत्सव' का कार्यक्रम अंग्रेज़ी में इस प्रकार बनाया गया था :—

Rodrigues Hindi Diwas Celebration

13 October 2016

Le Flamboyant Hotel - Port Mathurin

Official Programme

- Yajna and Devotional songs by Pandits and Panditas
- Welcome Address and Speech by Mr Ramnick Chittoo, President Hindi Speaking Union and Rodrigues Arya Samaj
- Song by Pandita Pratima Devi Goreeba
- Speech by Dr Judraduth Chunnoo
- Spiritual Speech by Dr O.N. Gangoo- President Arya Sabha
- Speech by Prof. V.K. Mishra - General Secretary - World Hindi Secretariat
- Speech by Dr Nutan Pandey, 2nd Secretary - Indian High Commissioner
- Speech by Mr Serge Clair - Chief Commissioner of Rodrigues
- Speech by His Excellency - Mr Paramasivam Pillay Vyapoory, G.O.S.K, Vice President of Republic of Mauritius
- Distribution and donation of books
- Vote of thanks by Mr Bissoon Mungroo
- Prop. of Le Flamboyant Hotel
- Shanti Path - followed by Mahaprasad

Master of Ceremony - Pta Lilamunnee Kureeman

MBC ने कार्यक्रम का आद्यान्त कॉवरेज किया ।

महत्वपूर्ण एवं विशेष बातें निम्नलिखित हैं-

(१) आर्य सभा के प्रधान, डॉ० उदयनारायण गंगू जी ने रोड्रिग्स के मुख्या माननीय सेर्ज़ क्लेर की उपस्थिति को ध्यान में रखते हुए अपना वक्तव्य अंग्रेज़ी भाषा में दिया, जिसका सार तत्त्व हिन्दी में भी दिया गया।

(२) आर्य सभा मोरिशस की ओर से रोड्रिग्स में आर्य समाज एवं हिन्दी भाषा के पठन-पाठन को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक सहयोग प्राप्त हो रहा है ।

(३) हिन्दी प्रचारिणी सभा के सदस्य की ओर से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ ।

(४) भारतीय उच्चायुक्त ने भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया ।

(५) डॉ० इन्द्रदत्त चन्नू जी ने रोड्रिग्स के राष्ट्रीय पुस्तकालय (National Library) को हिन्दी पुस्तकें प्रदान कीं।

(६) रोड्रिग्स के क्रिओल भाषी विद्यार्थियों ने हिन्दी में यज्ञ प्रार्थना की कुछ पंक्तियाँ गाईं।

(७)रोड्रिग्स के प्रमुख-माननीय सेर्ज़ क्लेअर ने अपना प्रवचन 'नमस्ते' से आरम्भ करके सभी का मन मोह लिया ।

(८) मोरिशस के उपराष्ट्रपिता की उपस्थिति एवं सुन्दर भाषण ने उत्सव में चार चाँद लगा दिये ।

(९) हॉटल के मालिक, श्रीमान् बिसुन मंगरू का तो कहना ही क्या ! वे स्वयं उपस्थित होकर कार्यक्रम की तैयारी के लिए अपने कर्मचारियों को निर्देश देते रहे। उनकी महान् उदारता है कि उन्होंने कार्यक्रम के लिए हॉटल में जगह तो दी ही। साथ में अपने पूरे कर्मचारियों द्वारा मेहमानों का स्वागत एवं महाप्रसाद की व्यवस्था करके सभी का मन जीत लिया।

फल यह निकला कि रोड्रिग्स में गैर हिन्दी भाषियों के बीच हिन्दी-प्रसार को प्रेरणा मिली। वहाँ की जनता को हिन्दी भाषा के महत्व का ज्ञान हुआ। रोड्रिग्स में बसे हमारे हिन्दू परिवार अपनी भाषा-संस्कृति से जुड़े रहेंगे और उनके बच्चों को भी इससे लाभान्वित होने का सुअवसर प्राप्त होगा।

इस प्रकार मोरिशस का आर्यसमाज हिन्दी महासागर के एक और द्वीप में आर्यभाषा के प्रचार-प्रसार कार्य में एक कदम आगे बढ़ा।

कार्यक्रम में भाग लेनेवाले विशेष मेहमान थे –

- मोरिशस के उपराष्ट्रपति, माननीय परमशिवम् पिले वायापुरी, जी.ओ.एस.के
- रोड्रिग्स के मुख्य उच्चायुक्त - श्री लुई सेर्ज़ क्लेअर
- भारत उच्चायोग के प्रथम सक्रेटेरी - श्रीमती डॉ० नूतन पाण्डे
- विश्व हिन्दी परिषद् के महामन्त्री - डॉ० विनोद कुमार मिश्र
- आर्य सभा मोरिशस के प्रधान - डॉ० उदयनारायण गंगू
- डॉ० इन्द्रदत्त चन्नू
- टोली में सम्मिलित मोरिशस से – डॉ० उदयनारायण गंगू, सपत्नीक
- टोली संयोजक - श्रीमान् भूरन्द्रनाथ करीमन और पंडिता लीलामणि करीमन
- पंडित शामसुन्दर शोभन
- श्रीमान् अशोक कुमार गरीबा और उनकी पत्नी पंडिता प्रतिमा गरीबा
- पंडिता कुञ्जा, श्रीमती कालन, श्रीमती दीनन, श्रीमती हरिसंह, पंडिता बालगोबिन्द, श्रीमती गोलाम, श्रीमती रणु, श्रीमती कविता रामरूप, पंडिता राजवंश सोलिक, पंडिता बसन्ती गिरधर आदि ।

कार्य को सफल बनाने केलिए हॉटल मालिक श्री बिसुन मंगरू ने स्वयं उपस्थित होकर अपना योगदान दिया। इनको तथा टोली के सभी सदस्य-सदस्याओं के सहयोग के लिए आर्य सभा मोरिशस एवं आर्यसमाज रोड्रिग्स की ओर से आभार एवं कार्य सफलता के लिए बधाई ।

रविवार १६ अक्तूबर को प्रातःकाल साढ़े नौ बजे रोड्रिग्स आर्यसमाज में एक वृहद् यज्ञ हुआ । भजन-भाषणों के साथ कार्यक्रम का समापन १२ बजे हुआ। उपस्थित जन इस भव्य कार्यक्रम से बड़े ही प्रभावित हुए।

भावी योजना है – हिन्द महासागर के अन्यों टापुओं में आर्यसमाज एवं आर्य भाषा का प्रचार-प्रसार करना।

हिन्दी सेवी श्री नारायणपत दसोई अब न रहे

पोर्ट लुई निवासी श्री नारायणपत दसोई जो हिन्दी सेवी और हिन्दी लेखक थे, उनका देहावसन २० सितम्बर २०१६ तो ८३ वर्ष की आयु में हो गया। वे काफ़ी समय से रुग्णावस्था में थे। अच्छी संख्या में उनके हित-मित्र और हिन्दी प्रेमी उनकी अंतिम बिदाई के लिए उनके स्थान पर उनकी अर्थी उठने के समय आये थे। श्री नारायणपत जी आर्य सिद्धान्त के प्रतिपोषक थे। पोर्ट लुई में स्थित आर्यसमाज के सदस्य थे और आर्यसभा पोर्ट लुई में आया करते थे। सदस्यों से सम्पर्क बनाये रखते थे। आर्यसमाज स्वामी दयानन्द व वैदिक सिद्धान्त पर खोजपूर्ण उनके लेख आर्योदय में छपते थे । उनकी अर्थी उठने के समय आर्य सभा के पंडित रूपन जी ने उनके बारे में चन्द शब्द कहे और उनकी पत्नी, बेटे, बेटियों तथा सभी परिवार के लोगों को सहानुभूति प्रकट करते हुए उनकी आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। आर्यसभा के कार्यकारिणी समिति के उपमन्त्री डॉ० जयचन्द लालबिहारी ने 'आर्योदय प्रेस' समिति की ओर से श्री नारायणपत दसोई के प्रति भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की यह कहते हुए कि दसोई जी 'आर्योदय' के लिए लेख लिखा करते थे और खुद आकर लेख प्रकाशित होने से पहले लेखों को देखते थे, आवश्यक संशोधन कार्य करते थे ताकि प्रकाशित लेखों में कोई गलती न रहे । उन्होंने आर्य सभा और प्रेस समिति की ओर से संतप्त परिवार को संवेदना प्रकट की।

श्री नारायणपत जी सरकारी स्कूलों में हिन्दी के अध्यापक थे । इससे पहले वे प्रिंटिंग प्रेस में हिन्दी व अंग्रेज़ी के अक्षर बिठाने का काम करते थे। इस तरह से उन्होंने हिन्दी की प्रेस के माध्यम से बड़ी सेवा की । व्याकरण सम्मत हिन्दी तथा हिन्दी साहित्य का उन्हें अच्छा ज्ञान था। श्री सोमदत्त बखोरी जी के सम्पादन में हिन्दी परिषद द्वारा प्रकाशित 'अनुराग' पत्रिका के प्रकाशन व संपादन तथा प्रूफ़ रिडिंग में उनका पूरा सहयोग रहा । साहित्यिक विधाओं पर भी सशक्त रचनाएँ करने में वे सक्षम थे। श्रीमती सरिता बुद्धू द्वारा प्रकाशित 'स्वदेश' पत्र के सम्पादन में भी सहयोग दिया था।

श्री नारायणपत दसोई को आज हमारे बीच न होने से हिन्दी जगत को क्षति पहुँची है। उनकी हिन्दी सेवा के लिए वे चिरस्मरणीय रहेंगे ।

इन्ददेव भोला इन्द्रनाथ (डॉ०)
मंत्री आर्योदय प्रेस समिति तथा मान्य प्रधान हिन्दी लेखक संघ

He who always thinks well before he acts, is ever ready to embrace truth and reject falsehood, who puts down the unjust and helps the just, feels for others in the same way as he does for his own self - even him I call just.

Swami Dayanand
The Light of Truth

५ सितम्बर २०१६ को दिल्ली के प्रवासी भवन में प्रह्लाद रामशरण पर एक पुस्तक का लोकार्पण

'मॉरिशस के हिन्दी सेवी प्रह्लाद रामशरण' नामक पुस्तक का लोकार्पण

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् और अनुसंधान यात्रा द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'मॉरिशस के हिन्दी सेवी प्रह्लाद रामशरण' नामक पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर परिषद् के नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं दक्षिण अफ्रीका में भारत के पूर्व राजदूत श्री वीरेन्द्र गुप्त ने कहा कि विश्व के विभिन्न देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने में हिन्दी भाषा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मॉरीशस में हिन्दी भाषा का आधार अत्यंत सुदृढ़ और समृद्ध है। वहाँ के साहित्यकारों ने हिन्दी में अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं। मॉरिशस के साहित्यकारों में प्रह्लाद रामशरण का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। इन्होंने अपनी सूक्ष्म शोध-दृष्टि और गंभीर लेखन से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है।

मॉरिशस के हिन्दी सेवी प्रह्लाद रामशरण का संपादन अनुसंधान यात्रा के अध्यक्ष डॉ० ब्रजेश कुमार यदुवंशी ने किया है। इस पुस्तक का लोकार्पण करते हुए भारत में मॉरिशस के उच्चायुक्त महामहिम जगदीश गोवर्धन ने कहा कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। मॉरिशस के लोग चाहते हैं कि हिन्दी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बने । उन्होंने प्रह्लाद रामशरण की हिन्दी सेवा पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि हमें हिन्दी भाषा के साथ-साथ अपनी मातृभाषा भोजपुरी के प्रचार-प्रसार पर भी ध्यान देना चाहिए। पुस्तक की विषयवस्तु पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी पत्रकार एवं लेखक श्री रंजीत पांचाले ने कहा कि मॉरिशस के हिन्दी लेखन में प्रह्लाद रामशरण का योगदान उल्लेखनीय है। लोकार्पण समारोह में 'प्रवासी संसार' के संपादक श्री राकेश पाण्डेय, वरिष्ठ हिन्दी कवि एवं विचारक डॉ० बी.एल. गौड़ तथा हिन्दी बुक सेंटर के निदेशक श्री अनिल कुमार ने भी अपने विचार प्रकट किये।

लोकार्पण समारोह के अध्यक्षीय भाषण में केंद्रीय हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ० कमल किशोर गोयनका ने श्री प्रह्लाद रामशरण के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि रामशरण अपने अध्ययन, अध्यवसाय एवं गहन शोध के कारण सिर्फ एक साहित्यकार नहीं बल्कि साहित्य और संस्कृति के संग्रहलाय बन गये हैं। उन्होंने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भांति मॉरिशस में हिन्दी साहित्य के विस्मृत अध्यायों का संकलन कर अत्यंत महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक कार्य किया है ।

इस समारोह के समापन भाषण में परिषद के महासचिव श्री श्याम परांडे ने कहा कि हिन्दी संसार के अधिकांश देशों में बोली और समझी जाती है तथा मॉरिशस तो हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण देश है। उन्होंने प्रह्लाद रामशरण के अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् तथा इसके संस्थापक स्व-बालेश्वर अग्रवाल के साथ सुदृढ़ संबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं तथा भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार परिषद् का उद्देश्य रहा है और इस दृष्टि से आज मॉरिशस के हिन्दी सेवी प्रह्लाद रामशरण नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह की बहुत महत्वपूर्ण शुरूआत है। भविष्य में भी हम ऐसे कार्यक्रम आयोजित करेंगे।

पुस्तक के सम्पादक डॉ० ब्रजेश कुमार यदुवंशी ने मॉरिशस के हिन्दी लेखन में श्री प्रह्लाद रामशरण के योगदान को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि उन्होंने इतिहास के विस्मृत अध्याय को अपने साहित्य में जीवन्त किया है ।

नारायण कुमार

श्रद्धांजलि सभा - स्वर्गीय पण्डिता तारावन्ती बम्मा जी

विद्यानदत्त प्रभू

शनिवार १७ सितम्बर २०१६ को ठीक दो बजे श्री विष्णुदत्त बिजाधर जी की अध्यक्षता में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। इस में बम्मा परिवार के सदस्य यज्ञमान थे, पण्डित सत्यानन्द फेकू जी और पण्डिता चन्द्रिका राजू जी ने यज्ञ किया। यज्ञ के बाद प्रार्थना भजन हुआ। आर्य महिला समाज की मन्त्रिणी रामावती सिसाहाय जी ने कार्यक्रमों का संचालन किया ।

परिवार वालों के साथ समाज के सदस्यों एवं परिचित लोगों ने पण्डिता से जुड़ी अपनी-अपनी स्मृतियाँ अभिव्यक्त कीं।

मोका ज़िला परिषद् एवं वेद प्रचार समिति के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी ने स्वर्गीय पंडिता बम्मा जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। इसके बाद श्रीमती तारा साधुचरण जी द्वारा एक भजन हुआ। फिर तब आर्य महिला समाज की प्रधाना श्रीमती वेदावती बिजाधर जी ने दो शब्द कहे। पण्डिता तारावन्ती बम्मा जी के चले जाने से हम एक अच्छी समाज सेविका खो बैठे। वे धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में हमेशा आगे रहती थीं।

आर्य सभा मोरिशस के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू जी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पंडिता सामाजिक कार्यों, सत्संग पूरी लगन और निस्वार्थ भाव से करती रही ।

अन्त में यह घोषणा की कि यज्ञशाला को उनका नाम दिया जाय । अन्त में मान्य प्रधान श्री रामकरण जोखू जी ने धन्यवाद-समर्पण किया । ईश्वर से प्रार्थना है कि उनका परिवार सदा सुखी रहे । समाज के लोग उनके बताये हुए मार्ग पर चले ।

सदो देवानामसि देवि शाले ।

(अथर्व० ९.३.७)

घर में देवगृह या यज्ञशाला हो ।

परीक्षापूर्व यज्ञ

पं० माणिकचन्द बुधु, आर्य भूषण

आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में एवं पाम्प्लेमूस आर्य ज़िले के सहयोग से वर्ष २०१६ की पिछले चौमासिक समयावधि में अनेक बृहद् सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्य सम्पन्न हुए। जून मास में सत्यार्थप्रकाश जयन्ती, जुलाई से अर्ध सितम्बर मास तक श्रावणी उपाकर्म महोत्सव तथा इन दिनों स्कूलीय परीक्षा पूर्व यज्ञों का आयोजन बड़ी श्रद्धा, रूचि और लगन के साथ शाखा-समाजों तथा घर-घर में हो रहा है।

समाज के कार्यकर्ता और अभिभावक-वर्ग इस कार्य में पूरा सहयोग दे रहे हैं। शीतकालीन कठिन परिस्थितियों के बावजूद श्रद्धालु वेद प्रेमी अपना अमूल्य समय दान कर वैदिक धर्म तथा यज्ञ की मर्यादा का यथाशक्त्य संरक्षण करते रहे। उन्होंने तन-मन-धन के त्याग का अद्भुत उदाहरण दिया। यज्ञ, भोजन तथा पुरोहित-पुरोहिताओं के दक्षिणा-दान में सराहनीय उदारता दिखाई। धर्म-प्रचार के क्षेत्र में आर्य समाजियों तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के भक्तों और अनुयायियों का परम्परागत उदाहरणीय कार्य रहा है।

पिछले कुछ दिनों से स्कूलीय परीक्षा पूर्व यज्ञ की एक नितान्त नई समाँ बंध गयी । कुछ आर्य मंदिरों के अतिरिक्त घर-घर में परीक्षापूर्व यज्ञ छात्र-छात्राओं के प्रोत्साहन और प्रेरणा हेतु सम्पन्न हो रहा है। इस सम्बन्ध एक उदाहरण प्रस्तुत करना अपेक्षणीय है ।

मोरसेल्माँ आर्यसमाज शाखा न० ७/१३६ अपने मंदिर में परीक्षापूर्ण यज्ञ की एक जीती-जागती परम्परा स्थापित कर चुकी है। हर साल की तरह इस वर्ष भी शनिवार १ ली अक्तूबर २०१६ को यहाँ एक बृहद् बहुकुण्डीय परीक्षापूर्व यज्ञ का सफल आयोजन हुआ । जिसमें दस कुण्ड और साठ (६०) छात्र-छात्राओं की उपस्थिति हुई। छात्र-छात्राओं के अभिभावक-वर्ग भी अच्छी संख्या में यहाँ उपस्थित हुए।

इस परीक्षा पूर्व के यज्ञ का संचालन वरिष्ठ पुरोहित पं० माणिकचन्द बुद्धु पंडित मधूजिराखन तथा पं० विद्यानी मुखराम के सहयोग से निर्विघ्न सफलता पूर्वक किया ।

यज्ञ के पश्चात् सत्संग के समय समाज के प्रधान डॉ० जगेसर द्वारा बच्चों के ध्यान के निमित्त भावपूर्ण सन्देश हुआ। मन्त्री पं० सुमन रामचरण द्वारा तथा अन्य कलाकारों द्वारा सुन्दर भावभीनी भजन हुए। पं० माणिकचन्द बुधु द्वारा छात्र-छात्राओं के ध्यान के लिए सरस्वती वन्दना द्वारा ज्ञानार्जन हेतु सुन्दर पर संक्षिप्त प्रवचन हुआ। पं० विद्यानी मुखराम ने बच्चों की पढ़ाई पर माता-पिता के सहयोग पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अन्त में सब को महाप्रसाद (भोजन) से सत्कार किया गया। परन्तु इससे पूर्व समाज के कार्य-कर्त्ताओं द्वारा सभी उपस्थित छात्र-छात्राओं को परीक्षा के लिए उपयुक्त सामान दान में दिये गये ।

अन्ततः यह रेखांकित करना आवश्यक है कि मोर्सेल्माँ आर्यसमाज शाखा न० ७/१३६ के समस्त कार्यकर्ता बधाई के पात्र है। वैदिक धर्म तथा समाज-सेवा के प्रति उन सब का गहन समर्पण - भाव उदाहरणीय है। उन्हें साधुवाद ।

वेद-ज्ञान

पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

जगती के स्थित रहने या प्रलय हो जाने पर भी तीन तत्व सदैव बने रहते हैं। ये तीन तत्व परमात्मा और प्रकृति। 'प्रकृति' पँचभूत नाम का जड़ तत्व है, दूसरा, सर्वशक्तिमान चेतन परमात्मा नाम का तत्व है और तीसरा असंख्य पराश्रित आत्म-तत्व हैं। तीनों तत्व अदृश्य हैं। इन तीनों में सिर्फ़ परमात्मा तत्व अपने सही रूप में सदैव बना रहता है ।

प्रलय हो जाने पर परमात्मा ही पुनः सृष्टि करते हैं । वे सब कुछ ज्ञानयुक्त करते हैं। ज्ञान स्वरूप परमात्मा के सभी काम ज्ञानजन्य होते हैं। संयम नियम का नाम ही ज्ञान है। परमात्मा ने पत्थर से लेकर हिमालय तक और मिट्टी से लेकर सभी ग्रहों की संरचना एक ऐसी योजना से की है कि कहीं पर किसी दूसरे पर अत्याचार नहीं होता। यह विश्व बड़े मँजे हुए ज्ञान से रचा गया है। सभी वस्तुएँ समय पर जैसा चाहिए, वैसे ही रचित हैं। हम तभी तो परमात्मा को ही परम ज्ञानी होना स्वीकारते हैं। ज्ञान को ही ब्रह्म कहते हैं। तभी तो सृष्टिकर्ता को परब्रह्म परमेश्वर कहते हैं। असंख्य आत्माएँ ज्ञान की खोज में रहती हैं। पहले-पहल जलमय जगती पर सब तरहों की मछलियाँ बनकर जलीय ज्ञान को प्राप्त करना चाहती हैं। आत्माओं को अपने-अपने कर्मों के आधार पर ही ज्ञान मिल पाता है। सूखी मिट्टी के ऊपर होने पर आत्माएँ स्थलीय और आकाशीय जीव बनकर आने लगती हैं। जब ईश्वर हरियाली और फल-फूलों को उगा देते हैं तब कहीं वे लाखों वर्षों बाद में अधिक ज्ञान बटोर पाने वाले मनुष्य को भेजते हैं। मानव सृष्टि के आरम्भ में नहीं आते हैं ।

जो टोली वेद ज्ञान लेकर धरती पर आती है, देवता कहलाती है वह टोली पूर्ण ज्ञानी होती है। हम लोग इन्हीं लोगों के वंशज हैं, इसलिए अपने को देव सन्तान या ऋषि सन्तान होना कहते हैं। इस तरह हम अपने को देव सन्तान होना स्वीकारते हैं। हम अपने को जंगलियों के वंशज नहीं कहते।

मनुष्य अपने जन्म से स्वाभाविक ज्ञान को लेकर संसार में आते हैं। मनुष्य अन्य पशुओं जैसे अपने स्वाभाविक ज्ञान से जीवन चला नहीं पाते हैं। धरती पर वैदिक जन को निमित्त ज्ञान के संस्कार की आवश्यकता पड़ती है। उन लोगों का वैदिक-ज्ञान से दूसरा जन्म होता है। वे तभी द्विज कहे जाते हैं। वे दूसरा जन्म पाते हैं। परमात्मा नैमित्तिक ज्ञान अर्थात् वेद-ज्ञान के साथ देवताओं को भेजते हैं। स्वाभाविक ज्ञान कभी भी नैमित्तिक ज्ञान में परिणत नहीं होते, पर नैमित्तिक ज्ञान में जीते रहने पर लोग उसे स्वाभाविक बना लेते हैं। तभी आजकल जो कोई जैसे वातावरण में उत्पन्न होते हैं, उसकी छाप अपने ऊपर ले लेते हैं। **क्रमशः**

Deepāvali Mahotsav & Rishi Nirvān Divas 2016 29.10.2016 à l'Arya Bhavan, Port Louis

cont. from pg 1

Le Professeur S. Jugessur, représentant du Sarvadeshik Sabha, a accentué son intervention sur l'universalité de cette fête célébrée à travers le monde de l'est à l'ouest, du nord au sud. Il nous faut inculquer les valeurs de cette lumière de connaissances dès le plus jeune âge parmi nos enfants car le monde s'est enfoui sous la consommation à l'outrance. Au-delà de l'aspect religieux, spirituel et culturel il nous faut vulgariser le

cachet scientifique de Deepāvali. Les grains de la nouvelle récolte sont mélangés aux offrandes *(sāmagri)*. Le *yajna* transforme ces oblations en microparticules et diffuse les vertus (médicinales, odoriférantes, exquises, etc.). Ils nous protègent contre de nombreuses maladies en repoussant les virus et autres bactéries, ainsi purifient l'environnement. Au lieu de dépenser sur les pétards et feux d'artifices qui engendre la pollution sonore, de l'air et de l'environnement cet argent peut servir un objectif noble comme l'allègement des souffrances de ceux dans le besoin.

Le président de l'Arya Sabha, Dr. O.N. Gangoo a étendu un accueil chaleureux à tous ceux présents aussi bien qu'à ceux qui y assistaient à travers la télévision nationale. Il a aussi exprimé ses meilleurs vœux à toute la nation pour que la fête de Deepāvali soit une occasion de redonner de la noblesse à l'ensemble de nos pensées, paroles et actions.

Le vice-président de la République, Son Excellence Mr. Barlen Vyapoory a parlé de Deepāvali comme une fête magnanime dont les célébrations ont dépassé les frontières de l'Inde où le monde entier réfléchit sur le symbole de la lumière : la lumière du savoir qui nous permet de vaincre les mauvaises tendances et de renchérir les bonnes choses de la vie. La lutte interminable entre le bien et le mal reflète l'image du champ de bataille de Kurukshetra. On vit dans une ile pluriculturelle où se croisent les grandes religions du monde, une raison de plus pour persévérer vers l'illumination de son âme en vivant, à chaque instant, les enseignements du Maharishi Dayanand Saraswati, en particulier le Satyārtha Prakash. Qu'on repense à la façon de célébrer Deepāvali, loin des pétarades et la pollution sonore. Il a lancé un pressant appel aux parents d'être plus responsables : il nous faut transmettre les valeurs humaines universelles à nos enfants afin qu'ils puissent voir la lumière au bout du tunnel. Ces valeurs serviront de repères dans la vie contre les fléaux de la drogue, la corruption, etc. Ce sont les ingrédients de la plus simple recette d'un monde meilleur.

Le pandit Chooroomooney, chef-prêtre du Sabha a abordé dans le même sens. La fête de la lumière doit transcende le matérialisme. Il nous faut se ressourcer auprès des enseignements transmis par les sages. Maharishi Dayanand avait noyé les mauvaises connaissances et adopté les bonnes à la demande de son maître (*guru*). Il nous faut rejeter les mauvaises idées, attitudes, habitudes, etc. et faire de la place pour les bonnes et ensuite briller par sa façon de faire.

Le directeur du World Hindi Secretariat, Dr. V.K. Mishra s'est référé à la lutte éternelle entre la lumière et les ténèbres. Il a fait un retentissant appel à tous à faire jaillir la lumière chez soi et aussi chez la personne la plus démunie de la société. C'est la base réelle d'une lumineuse célébration de Deepāvali.

Le Swāmi Atmadikshitā a mis l'emphase sur la vraie lumière de Deepāvali : que rayonne parmi nous les enseignements Védiques si ne soit qu'une idée qu'on mette en pratique dans notre vie ; que le pardon et la compassion (*kshamā*) ne soit plus notre faiblesse mais notre point-fort ; qu'on ne se contente pas à reconnaitre Maharishi Dayanand comme guide… qu'on accepte de laisser filtrer ses enseignements dans notre mode de vie… qu'on devient sage au fond de soi… que la lumière du savoir des Védas jaillisse en nous et autour de nous à tous temps. *Rishi ko māne… Rishi ko bhi māne… Rishitva hamāre bhitara prakat hovein… Sadaiva Vaidika prakāsh se ālaukika hovein*.

Le lord-maire Mr. O. Kholeegan a plaidé pour la préservation l'harmonie entre les différents composants de la nation mauricienne. Deepāvali n'est pas seulement le moment des louanges sur le parcours achevé mais de s'atteler avec plus de sérénité à consolider les bases d'un brillant avenir. Que nous soyons tous des soldats à sauvegarder les valeurs universelles et lutter contre les problèmes de la drogue et autres fléaux qui rongent notre société.

Le titre d'Arya Bhushan a été décerné à Mme. Rutnabhooshita Puchooa, Mr. Ravindrasing Gowd et Mr. Indradeo Balgobin pour leur contribution au sein de l'Arya Samaj. Des certificats reconnaissant le travail social ont été remis à Mr. Krishnalal Mohit (Moka), Pt. Mooklall Lockman (Savanne), Mme. Deoranee Mungroo (Pamplemousses), Pt. Hemavat Jhupsee (Riv. Noire), Mr. Brahmarishi Naga (Flacq), Mrs. Hemavat Deepun (Port Louis), Mr. Jwala Kalyachetty (Riv. Du Rempart), Pt. Basdeo Chunnoo (Plaine Wilhems), Mrs. Seewree Beetorial (Grand Port.)

Les remerciements, prononcés par Mme. Yalini Rughoo-Yallappa, étaient dédiés à tous ceux qui ont contribué au succès de cette évènement, entre autres …aux membres du Sabha, des Arya Samajs, des Mahila Samajs et des sous-comités du Sabha ; au personnel du Sabha ; aux invités ; à la police, la direction et le personnel de la MBC ; et à la Municipalité de Port Louis. Elle a réitéré les vœux que Deepāvali apporte plus de clarté dans notre esprit et qu'on devienne un meilleur être humain.

Le programme a clôturé avec le Shānti pātha (prière pour la paix).

Yogi Bramdeo, *De la rédaction*

Photos : Nitin Sundhoo

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू, *पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न*
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न*
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

La célébration de Divali au niveau national

par Indradev Bholah Indranath, P.B.H

« L'étincelante lueur de Divali c'est la plus belle lumière lumineuse. »

C'est la fierté de tout un chacun de vivre dans un pays où il n'existe point de conflit communal, où des gens des plusieurs croyances y habitent en harmonie et pratiquent leurs religions, cultures et traditions sans aucune interférence. Cela fait de notre petite île Maurice un pays exemplaire. C'est un pays multiracial où la paix et l'affection prévalent tandis que plusieurs grands pays sont fracassés par la haine et la discrimination au nom de la religion, la culture et les traditions, et les gens sont en guerre. La compréhension et la tolérance des mauriciens est visible dans les célébrations des fêtes où les gens des différentes religions y participent et échangent les vœux de bonheur et de prospérité à leurs compatriotes.

Divali est célébrée chaque année avec beaucoup d'éclat et enthousiasme. La lumière de Divali symbolise la pureté de l'esprit, du cœur et du corps. Célébrer Divali avec ferveur et au-delà des préjudices et la haine a une signification logique du respect pour la fête et pour le monde. C'est impressionnant de constater que l'église et les gens tiennent à cœur cette fête de la lumière et célèbrent aussi Divali.

Le Ministère des Arts et de la culture avait organisé des concours de récitation des chants du Ramayana et des dessins basés sur cette épique. Les dessins avaient été exhibés et des prix étaient attribués aux gagnants de ces concours. Les chanteurs, dessinateurs et les musiciens de plusieurs communautés n'épargnèrent aucune peine pour que la fête Divali soit un succès retentissant.

Que cette fête de la lumière nous apporte le bonheur, la prospérité, la stabilité et la sérénité éternelle.

At Residence of Shriman & Shrimati Sookraj Bissessur & Members of Bissessur Family

Yajna was performed by Pt. Jaychand Aukhojee. Also present were : Dr Jaychand Lallbeeharry, Ph.D – Executive Member from Arya Sabha Mauritius, Shri Rajeshwar Lallbeeharry – President of Ilot Arya Samaj, Shri Prem Sawdaghar, Executive Member of Ilot Arya Samaj, Smt Maya Aukhojee, Member of Ilot Mahila Samaj and a host of members and participants.

Yajna verses from Yajur Vedas were explained by the afore-said Pandits Religious songs and Bhajans were sung by Panditji accompanied by the whole audience.

Dr Jaychand Lallbeeharry, Master of the ceremony laid huge emphasis upon the significance of Shravani and Shravani Yajna. He pointed out – "This very month is marked by the performance of yajnas and satsang during which the Vedic hymns are expounded in a pious atmosphere. These satsangs play a significant role in deepening unity in society. He further added that : "In India this month is a period of heavy rainfall and the inhabitants were less involved in outdoor activities. Sages seers left the forests and visited towns and villages to promote and propagate Vedic Culture and knowledge. He described how Maharishi Dayanand Saraswati has highlighted the very significance of Vedic teachings in life and referred to the Vedas as the true source of all knowledge which also convey the broad spectrum of knowledge namely :- **Jyana** -(Metaphysical knowledge). **Karma** – (Knowledge of Action). **Upasana** – (Knowledge of Worship of God and **Vijnana** – (Scientific knowledge).

Pandit J. Aukhojee had underlined upon the importance of reading, understanding and scrutinizing the Vedas. He drew special attention chapters six and seven of the Yajur Veda, whose study may break the monotony of our daily life, especially in a world full of misunderstandings, strifes, tensions, pretensions, sensations etc. Pandit ji also opined that – "All the Oriental scholars, Eastern or Western unanimously agree on the sublimity and noble teachings of the Vedas which are the oldest books in the library of the world. Swami Dayanand the great Vedic Scholar and Reformer of the 19th Century says that the Vedas are the source of all true knowledge.

Pandit J. aukhojee also commented on difficulties confronted by human beings. To overcome stress - society celebrates various festivities throughout generations. Festivals do ignite a huge wave of spirituality and divine joy, happiness and unity in society. The month of Shravan (July-August) rekindles immense spirituality and creates on atmosphere conductive to scriptural studies and self analysis. After a few devotional songs Dr Jaychand Lallbeeharry thanked all those present.

Shraavani is the period where we all endeavor to understand the essence of Vedic teachings and live the Vedic way of life.

This year Shravani Upaakarma Celebrations have been a complete and resounding success. It appears that people have awakened from their huge and long slumber and more conscious of their religious duty and responsibility. They have attended the functions celebrations with rapt attention and considerable enthusiasm.

S. Bissessur

२५ वाँ स्थापना दिवस

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

किसी संस्था के जीवन में २५ साल कोई मायना नहीं रखता, जब कि व्यक्ति के जीवन का एक चौथाई भाग होता है । व्यक्ति की आयु कम से कम सौ वर्ष की होती है, उधर संस्था कई सदियों तक चलती है।

गत शुक्रवार दि० २३ सितम्बर २०१६ को पूर्वी गाँव क्वीन विक्टोरिया (लाक्वीन) के आर्य महिला समाज ने अपनी स्थापना का पच्चीसवाँ वर्ष बड़ी ही धूमधाम से मनाया। स्थानीय सामुदायिक केन्द्र (Community Centre) जनता से खचाखच भरा था। मौक़े पर आर्यसभा के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू, महामन्त्री सत्यदेव प्रीतम के साथ दक्षिण से उपप्रधान रामधनी जी, फ्लाक परिषद् के प्रभाकर जिऊत, दोमा जी और पूर्वी प्रान्त के परिषद् की प्रधाना बहन धनवन्ती रामचर्ण उपस्थित थे। ठीक समय पर यज्ञ सम्पन्न पं० दयानन्द रामदू द्वारा हुआ। देखते-देखते पं० रामखेलावन एवं पंडिता कूँजा, नीलकण्ठ एवं बुझावन, दक्षिण पूर्व से पंडित दयबू भी आ गए ।

यज्ञ के तत्काल बाद स्थानी भजन मंडली द्वारा एक सुन्दर भजन हुआ ।